



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 28] नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 11, 1995/पाँच 21, 1916
No. 28] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 11, 1995/PAUSA 21, 1916

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

दम्बई, 11 जनवरी, 1995

का.आ. 34(अ)--यतः भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड का समाधान हो गया है कि व्यापारहित और लोकहित में यह आवश्यक है कि मद्रास स्टॉक एक्सचेंज लिमि. द्वारा बनायी गयी उपविधियों इसके नीचे उपबंधित रूप में संशोधन की जानी चाहिए :

अब हमलिण प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42) की धारा 10 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड एतद्द्वारा मद्रास स्टॉक एक्सचेंज लिमि. की उप-विधियों में निम्नलिखित अनुसूची में विनिर्दिष्ट संशोधन करता है और उस धारा की उपधारा 4 के परन्तुक के अनुसरण में भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड, व्यापारहित और लोकहित में तथा ग्राहकों और दलालों के बीच संबंधवहारों के अखिल विनियमन को सुगम बनाने के लिए, उप-विधियों में उक्त संशोधनों के पूर्व प्रकाशित की शर्त की एतद्द्वारा अभिमुक्ति करता है।

अनुसूची

विद्यमान उप-विधि 243 के बाद, निम्नलिखित उपविधि, 243ए अल्पस्थापित की जायेगी :

“243ए ग्राहकों और दलालों के बीच संबंधवहारों का विनियम

इन उपविधियों में अन्तर्विष्ट के प्रतिकूल कोई बात होते हुए भी, निम्नलिखित, ग्राहकों और दलालों के बीच संबंधवहारों को विनियमित करेगा।

(1) यह सभी सदस्य दलालों के लिए अनिवार्य होगा कि वे ग्राहकों का धन एक अलग खाते और अपना निजी धन एक अलग खाते में रखें। ऐसा संबंधवहारों के लिए जिनमें सदस्य दलाल एक प्रधान की स्थिति में भाग ले रहा है, ग्राहकों के खाते से कोई भुगतान करना अनुमत नहीं होगा। उपरोक्त सिद्धांत और परिस्थितियों का विस्तृत विवरण, जिनके अधीन ग्राहकों के खाते से सदस्य दलाल के खाते में अन्तरण अनुमत होगा, नीचे दिया गया है।

(क) सदस्य दलाल के खाते रखना : प्रत्येक सदस्य दलाल ऐसी लेखा बहियां रखेगा जो एक सदस्य के रूप

में उसके व्यापार के संबंध में दर्जित करने और भेद करने के लिए आवश्यक होंगी—

(i) उसके प्रत्येक ग्राहकों से या उसके कारण प्राप्त धन और उसकी या उनके कारण प्रदत्त धन और,

(ii) सदस्य के अपने लेखे में प्राप्त धन और प्रदत्त धन।

(ख) “ग्राहकों के खातों” में धन का भुगतान करने की वाध्यता—प्रत्येक सदस्य दलाल जो किसी ग्राहक के लिए धन धारण या प्राप्त करता है सदस्य के नाम में रखे जाने वाले चालू या जमा खाते में, ऐसा धन तुरन्त अदा करेगा, जिसके शीर्ष में “ग्राहक” शब्द प्रकट होगा (इसमें इसके पश्चात् “ग्राहक का खाता” निर्दिष्ट होगा) सदस्य दलाल सभी ग्राहकों के लिए एक समेकित खाता या प्रत्येक ग्राहक के नाम में खाते जैसा वह उचित समझे रख सकेगा; परन्तु कि जब कोई सदस्य दलाल ऐसा बैंक या ड्राफ्ट प्राप्त करता है जो अंशतः ग्राहकों से संबंधित और अंशतः सदस्य को देय धन को व्यक्त करे, वह ऐसे बैंक या ड्राफ्ट को पूरी अदायगी ग्राहकों के खाते में करेगा और तदनंतर निम्नलिखित पैरा घ (ii) में विनिर्दिष्ट के अनुसार अन्तरण करेगा।

(ग) “ग्राहकों के खातों” में अदा किया जाने वाला धन—निम्नलिखित के अतिरिक्त कोई धन ग्राहकों के खातों में अदा नहीं किया जायेगा—

(i) ग्राहकों के कारण धारित या प्राप्त धन,

(ii) सदस्य से संबंधित ऐसा धन जो खाता खोलने या बलाये रखने के प्रयोजन के लिए आवश्यक हो;

(iii) नीचे दिये गये पैरा घ के उल्लंघन में, खाते में भूलवश या दुर्घटनावश ग्राहक की गई राशि के प्रतिस्थापन के लिए धन;

(iv) सदस्य को प्राप्त बैंक या ड्राफ्ट जो अंशतः ग्राहक से संबंधित धन और अंशतः सदस्य को देय धन को व्यक्त करता हो;

(घ) “ग्राहकों के खातों” से ग्राहकित किया जाने वाला धन—निम्नलिखित के अतिरिक्त कोई धन ग्राहकों के खातों से ग्राहकित नहीं किया जायेगा—

(i) अदायगी के लिए उचित रूप से अपेक्षित धन, ग्राहक को या की ओर से या के लिए या सदस्य को ग्राहकों से प्राप्य ऋण की अदायगी के प्रति या ग्राहक के प्राधिकार पर ग्राहकित धन या जिस धन की बाबत ग्राहक की सदस्य को देयता है, परन्तु यह कि इस प्रकार ग्राहकित धन ऐसे प्रत्येक ग्राहक के लिए उस समय धारित कुल धन से किसी भी स्थिति में अधिक न हो;

(ii) सदस्य से संबंधित ऐसा धन जो ऊपर दिये गये पैरा 1ग (ii) या 1ग (iv) के अधीन ग्राहक के खातों में अदा कर दिया गया हो;

(iii) वह धन जो भूलवश या दुर्घटनावश उपर्युक्त पैरा ग के उल्लंघन में ऐसे खातों में अदा कर दिया गया हो।

(ङ) धारणाधिकार, मुजराई आदि का अधिकार प्रभावित नहीं—इस पैरा 1 में कुछ भी किसी सदस्य दलाल को ग्राहकों के खातों में जमा रखे गये धन के संबंध में किसी अवलंब या अधिकार से चाहे धारणाधिकार, मुजराई, प्रतिदावा भार द्वारा या अन्यथा के तौर पर हो, वंचित नहीं करेगा।

(2) सभी सदस्य दलालों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे ग्राहकों की प्रतिभूतियों के लिए अलग खाते रखें और ऐसी प्रतिभूतियों को उसकी/उनकी अपनी प्रतिभूतियों से अलग दर्शाने के लिए ऐसी लेखा-वहियां रखें जो आवश्यक हों। ग्राहकों की प्रतिभूतियों के लिए ऐसे खाते, अन्य बातों के साथ-साथ, निम्न-लिखित की व्यवस्था भी करेंगे:—

(क) विक्रय के लिए प्राप्त या बाजार में लंबित सुपुर्दगी के लिए रखी प्रतिभूतियां;

(ख) पूर्णतः प्रदत्त प्रतिभूतियां, ग्राहकों को सुपुर्दगी के लिए लंबित;

(ग) ग्राहक या उसके नामिती (नामितियों) के नाम में सदस्य द्वारा अन्तरण के लिए प्राप्त या अन्तरण के लिए भेजी गयी प्रतिभूतियां;

(घ) प्रतिभूतियां जो पूर्णतः प्रदत्त हैं और प्रतिभूति/मार्जिन आदि के रूप में सदस्य द्वारा अभिरक्षा में रखी गयी हैं इसके लिए सदस्य द्वारा ग्राहक से उपयुक्त प्राधिकार प्राप्त करना होगा;

(ङ) मार्जिन अपेक्षाओं आदि के लिए सदस्य के नाम में रजिस्ट्रीकृत, ग्राहक को पूर्णतः प्रदत्त प्रतिभूतियां, यदि कोई हों;

(3) सदस्य दलाल अपने ग्राहकों को भुगतान या खरीदी गई प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी प्राप्ति दिवस के दो कार्य दिवसों के भीतर करेंगे जब तक कि ग्राहक ने अन्यथा अनुरोध न किया हो। स्टॉक-एक्सचेंज प्राप्ति दिवस के तुरन्त बाद प्रेस विज्ञप्ति जारी करेगा।

(4) सदस्य दलाल संविदा के निष्पादन के 24 घंटों के भीतर ग्राहक को प्रतिभूतियों की खरीद/विक्री के लिए संविदा नोट जारी करेगा।

(5) ग्राहकों की ओर से खरीद के मामले में यदि ग्राहक संविदा के निष्पादन के लिए, सदस्य दलाल को, नकद शेयरों के लिए संविदा नोट की सुपुर्दगी के दो दिनों के भीतर या भुगतान दिवस से पहले

(स्टाक—एक्सचेंज द्वारा संबद्ध निपटान अवधि के लिए यथानिर्धारित) जो भी पहले हो, पूरा भुगतान करने में असफल रहता है तो सदस्य दलालों को स्वतंत्रता होगी कि वे प्रतिभूतियों की बिक्री द्वारा संव्यवहार समाप्त कर दें, जब तक कि ग्राहक का सदस्य के पास पहले से ही समतुल्य जमा न हो। इस संबंध में होने वाली हानि, यदि कोई हो, उस ग्राहक की मार्जिन राशि से पूरी की जायेगी।

- (6) ग्राहकों की ओर से विक्रय के मामले में यदि ग्राहक, संविदा नोट की सुपुर्दगी के 48 घंटों के भीतर या सुपुर्दगी दिवस (संबद्ध निपटान अवधि के लिए स्टॉक-एक्सचेंज के प्राधिकारियों द्वारा यथानिर्धारित) से पहले, जो भी पहले हो, वैध अन्तरण प्रलेखों के साथ बेची गयी प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी करने में असफल रहता है तो सदस्य दलालों को खरीद द्वारा संविदा समाप्त करने की स्वतंत्रता होगी। इस संव्यवहार में होने वाली हानि, यदि कोई हो, उस ग्राहक की मार्जिन राशि में से कटौती योग्य होगी।”

स्थान : बम्बई

[सं. 1/60/एसई/94]

दिनांक : 11 जनवरी, 1995

एस.एस. नाइकर्णी, अध्यक्ष

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA

NOTIFICATION

Bombay, the 11th January, 1995

S.O. 34(E).—Whereas the Securities and Exchange Board of India is satisfied that it is necessary in the interest of trade and public interest that the bye-law made by the Madras Stock Exchange Ltd., should be amended as provided hereunder :

Now therefore in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 10 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956), The Securities and Exchange Board of India hereby makes the amendment to the bye-laws of Madras Stock Exchange Ltd., specified in the Schedule below, and in pursuance of the proviso to sub-section (4) of that section, the Securities and Exchange Board of India, in the interest of the trade and in public interest and to facilitate regulation of transactions between clients and brokers without delay hereby dispenses with the condition of previous publication of the said amendments to the bye-laws.

SCHEDULE

After the existing bye-law 243, the following bye-law being 243A shall be inserted :

“243A REGULATION OF TRANSACTIONS BETWEEN CLIENTS AND BROKERS

Notwithstanding anything to the contrary contained in these Bye-laws, the following shall regulate the transactions between Clients and Brokers:

(1) It shall be compulsory for all Member brokers to keep the money of the clients in a separate account and their own money in a separate account. No payment for transactions in which the Member broker is taking a position as a principal will be allowed to be made from the client's account. The above principles and the circumstances under which transfer from client's account to Member broker's account would be allowed are enumerated below.

(A) Member Broker to keep Accounts.—Every member broker shall keep such books of accounts as will be necessary to show and distinguish in connection with his business as a member—

(i) Moneys received from or on account of and moneys paid to or on account of each of his clients and,

(ii) the moneys received and the moneys paid on Member's own account.

(B) Obligation to pay money into “clients accounts”.—Every member broker who holds or receives money on account of a client shall forthwith pay such money to current or deposit account at bank to be kept in the name of the member in the title of which the words “clients” shall appear (hereinafter referred to as “clients account”). Member broker may keep one consolidated clients account for all the clients or accounts in the name of such client, as he thinks fit: Provided that when a Member broker receives a cheque or draft representing in part money belonging to the client and in part money due to the Member, he shall pay the whole of such cheque or draft into the clients account and effect subsequent transfer as laid down below in para D (ii).

(C) What moneys to be paid into “clients account”.—No money shall be paid into clients account other than—

(i) money held or received on account of clients;

(ii) such money belonging to the Member as may be necessary for the purpose of opening or maintaining the account;

(iii) money for replacement of any sum which may by mistake or accident have been drawn from the account in contravention of para D given below;

(iv) a cheque or draft received by the Member representing in part money belonging to the client and in part money due to the Member.

(D) What moneys to be withdrawn from "clients accounts".—No money shall be drawn from clients account other than—

- (i) money properly required for payment to or on behalf of clients or for or towards payment of a debt due to the member from clients or money drawn on client's authority, or money in respect of which there is a liability of clients to the Member, provided that money so drawn shall not in any case exceed the total of the money so held for the time being for such each client;
- (ii) such money belonging to the Member as may have been paid into the client account under para 1 C(ii) or 1 C(iv) given above;
- (iii) money which may by mistake or accident have been paid into such account in contravention of para C above.

(E) Right to lien, set-off etc., not affected.—Nothing in this para 1 shall deprive a Member broker of any recourse or right, whether by way of lien, set-off, counter-claim charge or otherwise against moneys standing to the credit of clients account.

(2) It shall be compulsory for all Member brokers to keep separate accounts for client's securities and to keep such books of accounts, as may be necessary, to distinguish such securities from his|their own securities. Such accounts for client's securities shall, inter-alia, provide for the following:—

- (a) Securities received for sale or kept pending delivery in the market;
- (b) Securities fully paid for, pending delivery to clients;
- (c) Securities received for transfer or sent for transfer by the Member, in the name of client or his nominee(s);
- (d) Securities that are fully paid for and are held in custody by the Member as security|margin etc. Proper authorization

from client for the same shall be obtained by Member;

- (e) Fully paid for client's securities registered in the name of Member, if any, towards margin requirements etc.;

(3) Members Brokers shall make payment to their clients or deliver the securities purchased within two working days of pay-out unless the client has requested otherwise. Stock Exchange shall issue a Press Release immediately after the pay-out.

(4) Member brokers shall issue the contract note for purchase|sale of securities to a client within 24 hours of the execution of the contract.

(5) In case of purchases on behalf of clients, Member brokers shall be at liberty to close out the transactions by selling the securities, in case the client fails to make the full payment to the Member Broker for the execution of the contract within two days of contract note having been delivered for cash shares or before pay-in day (as fixed by Stock Exchange for the concerned settlement period), whichever is earlier, unless the client already has an equivalent credit with the Member. The loss incurred in this regard, if any, will be met from the margin money of that client.

(6) In case of sales on behalf of clients, Member brokers shall be at liberty to close out the contract by effecting purchases if the client fails to deliver the securities sold with valid transfer documents within 48 hours of the Contract note having been delivered or before delivery day (as fixed by Stock Exchange authorities for the concerned settlement period), whichever is earlier. Loss on the transaction, if any, will be deductible from the margin money of that client."

Place : Bombay

Dated : 11th January, 1995

[No. 1/60/SE/94]

S. S. NADKARNI, Chairman